काव्य-गुंजन

संदीप सिंह बुदियाल

BlueRose ONE .com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Mr. Sandeep Singh Budiyal 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.



For permissions requests or inquiries regarding this publication, please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-81-6744-013-6

First Edition: November 2026

संक्षिप्त सारांश और प्रस्तावना

कविताओं का यह संग्रह मानवीय अनुभवों को पाँच मुख्य स्तंभों में समेटता है:

- **अस्तित्व और समय**: अंतर्द्वंद्व, स्वयं की पहचान, समय का निरंतर प्रवाह और तत्व-ज्ञान की खोज पर केंद्रित है।
- **प्रेम और मानवीय संबंध**: चाहत, तन्हाई, गहरी दोस्ती और पहली मुलाकात की यादों के भावनात्मक उतार-चढ़ाव को दर्शाता है।
- **प्रकृति और यादें**: आंतरिक मानवीय भावनाओं को व्यक्त करने के लिए गाँव के परिदृश्य और नया दौर का सहारा लेता है।
- **सामाजिक चेतना और कर्तव्य**: छल-कपट पर व्यंग्य कसने के साथ-साथ देश-प्रेम, वीर जवानों, सांस्कृतिक जड़ों और राजभाषा हिंदी का गौरव गान करता है।
- **संघर्ष और संकल्प**: जीवन की बाधाओं को पार करने, साधना बनाए रखने और लक्ष्य की ओर निरंतर बढ़ते रहने का मार्ग दिखाता है।

यह काव्य संग्रह कुछ इन्ही विषयों को दर्शाती है और समाज को एक संदेश देने का प्रयत्न करती है।





समर्पण

"रङ्ग" समुदाय में मेरा जन्म एवं पालन पोषण हुआ एवं मुझे प्रकृति के मनमोहक दृश्यों को साक्षात रूप में निहारने का अवसर प्राप्त हुआ। "रङ्ग" समुदाय एक ऐसा समाज जहाँ प्रकृति की मौलिक रूप-स्वरूप में उपासना की जाती है, और वो समाज जो सदैव ही आपके सहायता के लिए तत्पर रहता है। इसके लिए मैं अपने आप को बहुत भाग्यशाली समझाता हूँ, और मैं सदैव ही ईश्वर का आभारी रहूँगा। मुझे इस पर गर्व है कि मेरा जन्म "रङ्ग" समुदाय में हुआ, इसीलिए मैंने अपनी इस पुस्तक मे इसको एक विशेष स्थान दिया है, तथा मैं अपने आप को इसी उपनाम ("रङ्ग") से पहचाया जाना चाहता हूँ।



अस्वीकरण

इस काव्य-संग्रह में संकलित सभी कविताएँ, गीत और शेरो-शायरी लेखक की मौलिक और काल्पनिक रचनाएँ हैं। काव्य में व्यक्त भाव, उपमाएँ और प्रतीक लेखक की साहित्यिक कल्पना और रचनात्मक स्वतंत्रता का हिस्सा हैं। इनका उद्देश्य किसी भी व्यक्ति (जीवित या मृत), जाति, धर्म, संप्रदाय या संस्था की भावनाओं को आहत करना नहीं है।

यदि किसी रचना की पंक्तियाँ किसी के वास्तविक जीवन या घटना से कोई समानता पाई जाती है, तो वह मात्र एक साहित्यिक संयोग होगी।



आभार

मेरी यह काव्य संग्रह की रचनाये किसी एक समय विशेष में लिखी हुयी नहीं है, अपितु यह कई वर्षो के अन्तराल में लिखी रचनाये है।

मेरा रुझान सैदव ही गीत कविताओं की तरफ रहा है, स्कूल के दिनों से ही कुछ गीत कविताये मेरे मन मस्तिष्क के विचारों को सोचने पर मजबूर करती रही है।

मैं, मैथिलीशरण गुप्त जी की कविता "मनुष्यता" से काफी प्रभावित हुआ हूँ। उसकी कुछ पंक्तियों मेरे अंदर बस सी गयी है और वही से मुझे प्रेरणा मिली है।

"नहीं वहीं कि जो जिया ना आपके लिए...!
यही पशु–प्रवृत्ति है कि आप आप ही चरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे..!!"

भूपेन्दर हज़ारिका जी की कविता "गंगा... बहती हो क्यूँ ?" की भी एक अलग छाप मेरे मन में हमेशा रहेगी, उनकी भी कुछ पंक्तियाँ मेरे मन के बेहद करीब से जुड़ा हुआ है।

"विस्तार है अपार, प्रजा दोनों पार
करे हाहाकार निःशब्द सदा
ओ गंगा तुम, गंगा.. बहती हो क्यूँ ?"

मै, सभी महान कवियों को अपनी इस काव्य संग्रह के लिये आभार प्रकट करता हूँ, जिन्होंने अपनी लेखनी से मुझे प्रेरित किया जिससे, मै इस दिशा में कुछ कदम बढ़ा पाया हूँ। पुनः उन सभी महान आत्माओ को मेरा शीष नमन और आभार है।



काव्य संग्रह

ऐं वक्त ठहरता क्यूँ नहीं ! (एक सवांद) 1
"अहंकार" (अज्ञानता) 4
चंचल चितवन (परिदृश्य-मेरा गांव) 7
छल कपट (व्यंग) 9
जीवन की गाथा (समय की धारा) 11
तेरे बिन (तन्हा दिल) 14
काफिले (जीवन प्रवाह) 16
मैं कौन हूँ ? (अंतर्- द्वन्द्व) 18
पल-पल (कभी-कभी) 20
पुकार (तत्व-ज्ञान) 21
रिमझिम सावन (प्रेम प्रसंग) 22
संघर्ष (साधना) 24
स्त्री (महाशक्ति) 26
तपन (एक मंजिल) 28
बढ़े चलो (पथ - प्रदर्शन) 30
अनजाने रास्ते (भूले - भटके) 31
फिर बजी बंशी है (नन्ही परी) 33
अनकही बातें (कसक) 35
ये दोस्ती (टेढ़े -मेढे रास्तें) 37
वो मेरी पहली मुलाकात (गुस्ताख़ दिल) 39
वीर जवान (शीष नमन) 41
तू ना होती तो..!! (एक छाप) 43
सपना (कोई अपना) 45
सफर (महकती खुशबु) 47
पत्ता (अंतर्-मन) 49

क्यूँ है ऐसा (मदहोश दिल) 51
वटवृक्ष (बूढ़ी बाहें) 53
कुछ कह रही है..! (संज्ञान) 55
तेरी यादो में (गुमसुम) 57
संवाद (दो मित्रो की) 59
नया दौर (सन्नाटा) 60
ऐ दिल संभल जा ज़रा (जवां- दिल) 62
देश प्रेम (समर्पण) 64
तेरी चाहत (दिले-तमन्ना) 66
पगडण्डी (एक किरण) 69
खामोश दिल (एक बात) 71
ऐ जिंदगी (कशिश) 72
प्रेरणा (कल्पना की उड़ान) 74
संकल्प (भारत एक खोज) 76
राम भक्त (हनुमान) 79
शिखर (लक्ष्य) 81
अनभिज्ञ खोज (अज्ञानी पुरुष) 83
राजभाषा (हिंदी) 84
भगत बगुला (पंचतंत्र की कथा) 85
"रङ्ग लेहे जेय्....रङ्ग ..!!(रङ्ग) 87

ऐं वक्त ठहरता क्यूँ नहीं !

(एक सवांद)



रोता बालक थक हार जिंदगी में
वक्त से यूँ ही पूछ बैठा .....!

"ऐं वक्त तू ठहरता क्यूँ नही ...
पल-पल में क्यूँ है बदल जाता!

क्या तुझे यें कल-कल बहती नदियाँ,
प्यारी नहीं लगती?

हवा की सरसराहट जब तेरे बदन को छुती,
मन में उमंग सी नही उठती?

यें आसमान में बहता बादल देख,
उसे पाने की चाहत नही होती ?

क्यूँ है रुठा तू खुद से इतना?
जो चला ही चला जा रहा इतना.....!

इन मदमस्त फिजाओं को छोड.....
किसी की चाहत में क्यूँ है खोया?

रुक कर देख एक पल इन घटाओ को
छू कर देख सावन की उस पहली बूँद को...

मन तेरा ना मचला,
सीने में आश तेरी ना जगी

तो फिर कहना ..... तो फिर कहना !"

जाने तभी क्या हुआ.....वक्त जैसे थम सा गया !
एक छोर से कुछ आहट से आयी ...

"मन ये मेरा भी चाहत रखता,
किसी खास के लिए ये भी मचलता,

सैर कराऊँ उसको दुनिया की,

मैं ये आश दिल में दबाये रखता ..
पर याद आती है तुम्हारी,

जो मैं रुका, तू ना बढ पायेगा,
तेरी चाहत से तू ना मिल पायेगा,

अगर तू ना मिला उससें,
तुझे मै कैसे देख पाऊँगा,

तेरी आँखों में जो नमी होगी,
देख उसे मैं जी ना पाऊगाँ !

बस यही दर्द है सीने में उठती
इसलिए रुकता नही .....

ठहरता नही कहीं .....

मिला दूँ तुझे उससे बस अभी
दिल में अब ख्वाइस है रहती यही ..

इसलिए मैं कही ठहरता नहीं
कही ठहरता नही .....!"

... कही ठहरता नही .....!"

"अहंकार"

(अज्ञानता)



स्वयं के भ्रम से निकली,
तेज अग्न की ये फुँकार है..!

क्षुब्ध-निशब्द कराती,
ये उस काल की झंकार है... !

लपट जलती कपाल में,
करती स्वयं का ही संहार है..!

छिन्न-भिन्न करती भीतर ही भीतर,
अहम् की वो अंगार है... !!

घने बादलों से घिरता विनाशक,
वज्रपात का वो प्रहार है..!

घृणित एवं नगण्य होता,
उसका निरंतर बहिष्कार है..!

छिन्न-भिन्न करती भीतर ही भीतर,
अहम् की वो अंगार है... !

ललाट में तनती-खिचती,
भौ की वो लकीर है..!

तोड़ती-मरोड़ती इस तन को,
बनाती उसे फ़कीर है .. !

क्षुब्ध-निशब्द कराती,
ये उस काल की झंकार है... !!

छिन्न-भिन्न करती भीतर ही भीतर,
अहम् की वो अंगार है... !

क्रोध में लिप्त, खोंलता उसका रक्त है..!
क्रूर उस चांडाल का, फिर बनता वो भक्त है .. !

क्षुब्ध-निशब्द कराती,
ये उस काल की झंकार है... !

निर्मम-निर्दयी होकर,
फिर गिरता वो निढाल है..!

कर जीर्ण-शीर्ण,
बनाता उसको कंकाल है .. !

छिन्न-भिन्न करती भीतर ही भीतर,
अहम् की वो अंगार है... !

हृदय से करुण-प्रेम भाव निकालता,
वो "अहंकार" है..!

उस विध्वंस के आगाज का,
वो विकराल अंधकार है .. !

क्षुब्ध-निशब्द कराती,
ये उस काल की झंकार है... !

.....वो "अहंकार" है...!

..... वो "अहंकार" है...!!

चंचल चितवन

(परिदृश्य-मेरा गांव)



झंझोर घोर अंधेरा दूर भागती ...!
देख प्रातःकाल की भानु की लालिमा आती ...!!

झम-झम गिरता नीर गगन से ...!
पावन करता धरा को मेघदूत अम्बर से ...!!

धूप नयी है छाँव नयी ...!
उस वेला की हर बात नयी ...!!

छल-छल गिरता झरनों का शोर नया ...!
कल-कल बहती जल का वो गीत नया ...!!

कोयल गाती, मोर नाचते...!
बाग-बाग में भँवरे गाते...!!

पक्षी भी अब आँगन भर आते...!
गीत मल्हार सावन के वो भी गाते...!!

तल में, नभ में,
इंद्रधनुष का जाल है बुनता...!

प्रकाश से खिलती-हँसती धरा को,
ये जग भी प्रेम से सुनता...!!

देख सुन्दर काया उस भू-धरा की...!
मन ये चंचल शीतल होवें ...!!

तन को लुभाते, मन को भाते...!
ये भाव पल-पल मन में आते...!!

इस मन की प्यास बुझाती ये रीत पुरानी...!
उस चंचल चितवन की ये गीत कहानी.....!!

उस चंचल ....!!

छल कपट

(व्यंग)



पग-पग में मिलता उसको ठोकर,
रूठा है टूटा है हर इंसान.!

करहा रहा अपने अन्तर्मन में,
छुप-छुप रोता है हर इंसान.!!

छल है, कपट है इस भीड़ में,
रस नहीं भाव नहीं उस प्रीत में.!

जीता है जितना जो भी इस खेल में,
मान नहीं सम्मान नहीं उस जीत में.!!

सागर सा गहरा मन उसका,
भीतर ही भीतर जलता.!

कहे किसी से भी तो क्या,
जग में हर कोई ऐसा मिलता.!!

दंगल ही दंगल है इस जंगल में,
वीराने सा बचा कही, अब कोई छोर नहीं.!

अपनों से अपना लड़ता इस आँगन में,
कड़क बादलों की गर्जनो का अब शोर यही.!!

पल-पल में तन की प्यास इन्हे सताती,
क्यूँ फिर इस तन का करते, इतना ये अभिमान .?

बिखर जाते जीवन के तनिक-तनिक क्षण में,
निडर से बनते- हसते, क्यूँ करते फिर ये गुणगान .??

रूप सजी है, खूब सजी है,
फिर क्यूँ पल-पल में विचलित दिखता हर इंसान.?

शौर्य सजा है सीने में, है तमग़ा कंधो पे,
उन आँखों में क्यूँ दिखता फिर,

मन की कायरता में लिपटा हर इंसान.??
..... मन की कायरता में लिपटा हर इंसान??

जीवन की गाथा

(समय की धारा)



जीवन तो एक ऐसी समय की धारा है..
जो ऊपर ही ऊपर चढता हुआ पारा है..!!

वैसे देखो तो कभी कठिनाइयों की मझधार है..
और कभी रूकी हुई नीरस सी तरण ताल है..

पहाड़ों से उफानों में मचलती हुई सी जोश लाती है..
फिर आकर मैदानों में सरल सी नीर हो जाती है..

हर मोड़ पर वह टकरा कर, मुड़ सी जाती है..
नहीं तो उसे अपनाकर साथ उसे बहा ले जाती हैं..

जीवन तो एक ऐसी समय की धारा है..
जो ऊपर ही ऊपर चढता हुआ पारा है..!!

जीवन तो बनती बिगड़ती,
बुलबलों की वो बहार भी है..

एक पल में उसमें खुशियों का इंद्रधनुष समा जाता है..
वहीं दूसरे ही पल हवा में वो छू मंतर हो जाता है..

जीवन तो एक ऐसी समय की धारा है..
जो ऊपर ही ऊपर चढता हुआ पारा है..!!

जान लो जीना अगर तुझे इस जहाँ में है..
तो जी कर देखो अपनों के लिए, वहीं सबसे हसी है..

क्या तेरा क्या मेरा ये सब तो किसी का नहीं है..
किसी का था तब, जो तेरे पास अभी है..

कल किसी और का हो जाएगा, जो तेरे पास अभी है..
क्यूँ लड़ता है तू फिर हरबार, जो तेरा कभी नहीं है..

जीवन तो एक ऐसी समय की धारा है..
जो ऊपर ही ऊपर चढता हुआ पारा है..!!

जीवन तो वो हवा के झौखे का सुमार लाती है..
जो जहाँ रहे दिलों में अरमान ही अरमान जला देती है..

उसकी सरसराहट सी मस्ती में जाने क्या बात है..
जो ये मन हरबार यूँ ही उस पर मचल ही जाता है..!

जीवन तो एक ऐसी समय की धारा है..
जो ऊपर ही ऊपर चढता हुआ पारा है..!!

जीवन तो सर्द की वो ठिठुरती कहार भी है..
जिसके डाल-डाल से सारा पत्ता गिर ही जाता है..

पर इतना याद रखना, वो समय ही सबसे खास है..
क्योंकि सर्द के बाद ही तो सावन की महकती बहार है..!

.... सर्द के बाद ही तो सावन की महकती बहार है..!

तेरे बिन

(तन्हा दिल)

तेरे बिन जो जी रहा हूँ इस जहाँ में ..
पल पल सदियों से कम मुझको ना लगे ..!

तन्हा दिल पुकारे ,
किसी अपने को इस भीड़ में ..

जो आये तो भर जाये ,
जिंदगी फूल बहारो से..!

किसी की याद में पल - पल ये,
क्यूँ गुम हो ही जाता ..

रह कर भी क्यूँ इस जहाँ से,
खुद को जुदा-जुदा ही पाता ..!

हर बार , हर कोशिश में ..
क्यूँ ये दिल , हार ही जाता ..!

जो यादो में उसके , यूँ हूँ उलझा..
दिल हार कर भी , जीत ही जाता ..!

क्यूँ करे ये दिल, अब
किसी खास का इंतज़ार हर पल में ..

जाने यही दिल पर,
यूँ ना मुझे दिन -रात सताया करे ..!

जो मिले वो, आये जिंदगी में तो ठीक है ..
पर यूँ पल पल में मुझे रुलाया ना करे ..!

हुयी है खता हमसे , माना मगर ..
बेवफा तो कभी हम ना थे सनम . .!

होता कोई ऐसा फलसफा ..
जिसमे मै खुद को जता पाता ..

होता कोई ऐसा अफसाना ..
जिसमे हाल-ऐ-दिल तुझे बता पाता ..!

तू जो बोले तो इस जहाँ को,
छोड़ भी देते ....अगर

इस दिल को तेरे साथ,
जीने की ख्वाइश ना होता ..!!

..... जीने की ख्वाइश ना होता ..!!

काफिले

(जीवन प्रवाह)



सुरों की महफ़िल सजी थी,
काफिले यूँ गुजरे चले जा रहे थे ..!

पलकों में सपने लिए यूँ जगे-जगे से,
मन की आकांक्षाओं में यूँ दबे-दबे से..!

यूँ ही गुजर रहे थे शाम की आगोशियो में,
चल रही थी हवाएं भी उन सरगोशियों में..!

चहल-पहल सी थी उन खामोशियो में,
एक लहर सी उठी थी उन वादियों में..!

उन काफिलो में कौन किसका,
किसकी डगर, किसकी मंजिल कौन सा..!

कह पाना बड़ा मुश्किल था,
किसकी चाहत कब कौन था..!

राह वही पर मंजिल का पता ना था,
साथी बहुत और संगी से खफा ना था..!

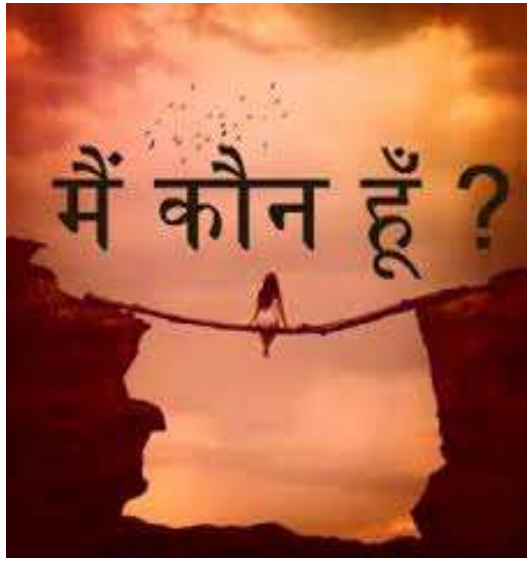
आँखों में कुछ बेताबियाँ लिए,
यूँ ही दौड़े चले जा रहे थे..!

सुरों की महफ़िल सजी थी,
काफिले यूँ गुजरे चले जा रहे थे ..!

.... काफिले यूँ गुजरे चले जा रहे थे..!
..... यूँ बस दौड़े चले जा रहे थे..!

मैं कौन हूँ ?

(अंतर्- द्वन्द्व)



मैं स्वयं का भ्रम हूँ,
या इस तन का श्रम हूँ.!

उस चित का चिंतन हूँ,
या इन फेफड़ों का स्वसन हूँ.!

इस उदर का भोज हूँ,
या परब्रह्म की खोज हूँ.!

इन भुजाओ का बल हूँ,
या उस क्रोध का छल हूँ.!

इन कुछ अंगो का आकार हूँ,
या किसी का कोई चमत्कार हूँ.!

उस काम का सेवक हूँ,
या इस बुद्धि का विवेक हूँ .!

इन शारीरिक क्रियाओं का विज्ञान हूँ,
या उस परलोक का अचूक ज्ञान हूँ.!

इस अनंत काल का मात्र एक क्षण हूँ,
या उस पराशक्ति का एक कण हूँ.!

इस संघर्ष का अभेद्य हूँ,
या उस रण का अजेय हूँ.!

किसी का भाई, किसी का पुत्र हूँ,
या उस बंधन भाव का सूत्र हूँ.!

मैं हूँ कौन ? जो इतना अज्ञात हूँ,
बस इन्ही प्रश्नों से आघात हूँ .!

..... **मैं कौन हूँ**?

पल-पल

(कभी-कभी)



यूँही गुजर जाता, वो हर फलसफा ..!
पल-पल में बदल जाता, वो हर नज़राना ..!!

कभी बैठे मिले थे, किसी झील के किनारे ..!
बध जाते है जिंदगी, उन्ही यादो के सहारे ..!!

किसी के चाहत में, खुद को ही भूल जाना ..!
पाकर उसे, अपने दिल में यूँ संजोए रखना ..!!

यूँ बनी है, मूरत उसकी इस दिल में ..!
ये ख़ुशी ना मिली थी, जो कभी इस जीवन में ..!!

पल-पल यादो में, खो जाता हूँ उसके ..!
रह-रहकर भी, गिर जाता हूँ चाहत में उसके..!!

पुकार

(तत्व-ज्ञान)



क्यूँ बहस -बाजी इतनी हो रही है ..?
खून क्यूँ जनता इतना बहा रही है ..?

क्यूँ हर तरफ तमाशो का शोर है ..?
उस ऊचाई पर पहुंचने का इतना क्यूँ ज़ोर है ..?

क्यूँ भुला तू अपनों का वो लाड-प्यार है ..?
लड़ने-झगड़ने को हर किसी से क्यूँ तू तैयार है ..?

जीत कर अपनों से , कैसे तू जीत पाएगा ..?
अपनों के लहू में लिपटे कौन सा गीत गा पाएगा ..?

रुक जा , ठहर जा , थम जा एक पल कही ..!
दौड़ता रह जायेगा तू , जिंदगी रह जाएगी पीछे कही ..!!

..... जिंदगी रह जाएगी पीछे कही....!!

रिमझिम सावन

(प्रेम प्रसंग)



सवालो से सजी वो आयी ऐसी..!
मन के राज यूँ ही खोलता चला गया..!!

धूप में पेड़ की छाँव सी आयी ऐसी..!
प्यार की बारिश में भीगता चला गया..!!

चहल सी उठी इस जहाँ में वो आयी ऐसी..!
साहिलों से बहता किसी किनारे चला गया..!!

शाम की झलकियों में झरोखे सी आयी ऐसी..!
सुबह के मिलन इंतज़ार से बेसब्र होता चला गया..!!

जहाँ में एक महक सी लेती हुयी आयी ऐसी..!
हर डगर-डगर यूँ ही झूमता चला गया..!!

आँखों में रंगीनियाँ लेती हुयी आयी ऐसी..!
ख़्वाबों के महल को मैं संजोता चला गया..!!

चाँदनी सी चमक लेती हुयी आयी ऐसी..!
रात के अँधेरे सा निशब्द होता चला गया..!!

सवालो से सजी वो आयी ऐसी..!
मन के राज यूँ ही खोलता चला गया..!!

..... मन के राज यूँ ही खोलता चला गया.....!!

संघर्ष

(साधना)



गहन खोज में बैठा, इतना तू आज क्यूँ..?
लगता किसी संघर्ष का अभिप्राय है तू..!!

मन को टटोलता, खुद को ही खोजता है क्यूँ..?
हर सोच में जीत के बीज यूँ ही बोता है तू..!!

आँखों में सपने लिए झूलता है क्यूँ..?
निगाहे दौड़ती, ढूढती उसी को रहता है तू..!!

गिरता फिर उठ जाता, खुद को संभालता है क्यूँ..?
सदा उन लक्ष्यों को ही ताकता - साधता है तू..!!

नम सी पलकों में, कुछ कमी सी है क्यूँ..?
फिर उन्ही सपनो को हर रोज बुनता संजोता है तू..!!

खुद को धकेलता, इतना झंझोरता है क्यूँ..?
उस तपन में भी कमल सा शीत रहता है तू..!!

जोश में इतना मदमस्त हुआ है आज क्यूँ..?
खुद को भूलकर खुद ही को पाता है तू..!!

संघर्ष तो तुझे एक पल सा लगता है क्यूँ..?
जो उसके भेद को हरबार यूँ ही खोल लेता है तू..!!

..... भेद को हरबार यूँ ही खोल लेता है तू..!!

स्त्री

(महाशक्ति)



सुन मुझ स्त्री की ये बात,
ना समझ मुझको तू बेबस नारी..!

निर्बल लाचार समझकर,
ना कर तू अत्याचार यूँ बारी बारी..!

उस तपती-जलती धूप में,
और उस मूसलाधार बारिश में ..!

जिस आँचल ने तुझको ढककर तेरी शाख बचाई है,
उस स्त्री के मूरत की तूने आज लाज चुराई है..!

नहीं पता तुझे किस कोख से हुआ है तू पैदा,
होती माँ-बहन तुम्हारी फिर भी क्या यूँ तू करता..?

जो बन बैठा है तू यूँ बेदर्द जानवर,
क्या ये नहीं तेरी कायर निर्बलता..?

सुन तूने उस नारी के तन को लूटा है,
जिसने दी माँ की वो प्यारी ममता है..!

पावन सा वो पवित्र अटूट रिश्ता,
अब वो बंधन भी तुझसे छूटा है..!

समझ ले माँ-काली का रूप हूँ,
यूँ तेरा निस्पंद संहार करूंगी.!

जिस बर्बरता से तूने उसको लूटा,
खून के आंसू तुझे रुलाउंगी..!

.... खून के आंसू तुझे रुलाउंगी..!!

तपन

(एक मंजिल)



उस आगोश में खुद को मिटा,
तप कर उस तपन में, खुद को यूँ जगा..!

तेरी पलकों में नींद ना आये,
ऐसे सपनें, उन आँखों में तू सजा..!

यूँ तो तेज हवाएं चलेंगी,
जम के घटाएं भी बरसेंगी...!

उस भवंडर से कौतहूल मचेंगे,
बहारों में यूँ तूफ़ान भी उमड़ेंगे..!

मत घबरा, तू उन तूफ़ानों से,
ये तो उड़ा ले जाएंगी तुझे,

तेरे सपनों के और करीब में..!

भीगा दे तुझे, क्यों ना ये बरसातें,
सर-सर हवाओं से जो तू है बहके...!

याद रख, तू है मदमस्त मौला,
हर चमन में, तू तो यूँ ही है चमके..!

नहीं तेरा सवेरा कोई,
ना ही दिन-रात कोई,

तेरी तो बस मंजिल वही,
अब वही तेरी सखी...!

तेरे संकल्प से और दृढ़ निश्चय से,
ख्यालों में बस तुझे अब वही सूझे..!

खुद को कर काबिल इतना,
की तेरी मंजिल खुद तुझे ढूढे..!

.....की तेरी मंजिल खुद तुझे ढूढे...!

बढ़े चलो

(पथ - प्रदर्शन)

वीर तुम बढ़े चलो,
पथ पर यूँ नीरस ना पड़े रहो.!

होती जीत उसी की जो निरन्तर चलता है,
अडिग साहस से भरा जिसका मन रहता है.!

आसमां की उस लालिमा सी चमक अपनी भी तुम बनाओ,
सागर की लहरों में अपनी भी नौका तुम खूब चलाओ.!

वीर तुम बढ़े चलो, ...पथ पर यूँ नीरस ना पड़े रहो.!

रुको कभी तो वही ठहर मत जाना,
रूकावट समझकर वही बैठ मत जाना.!

सीख लेना उस रूकावट से,
मन मे धैर्य बाधना उस संकल्प से.!

वीर तुम बढ़े चलो, ..पथ पर यूँ नीरस ना पड़े रहो.!

राह वही डगर वही,
पर मंजिल अपनी-अपनी खुद चुनते है,

जीवन मिलता सबको एक जैसा,
पर अपनी किस्मत खुद ही बुनते है.!

वीर तुम बढ़े चलो, ... पथ पर यूँ नीरस ना पड़े रहो.!

अनजाने रास्ते

(भूले - भटके)



अनजाने रास्तो में मुलाकात यूँ कर लेना ..!
देख के भी यूँ अनदेखा ना कर देना ..!!

महक उठी थी जिस डगर में,
दो पल वहाँ रुक लेना ..!

गुजरो कभी उस गली से,
यूँ एक नज़र फेर लेना ..!!

खड़े मिले हम वहाँ या नहीं,
मेरी परछाई को एक सलाम लौटा देना ..!

उस दिल से निकली वो हर बात ना सही,
बस एक बात अपने दिल से जोड़ लेना..!

ना भूले थे कभी,
ना भूल पाएंगे कभी,

ज़ख़्म खाये है हमने भी,
ये बात ज़रा दूर ही रखना..!

उस महक में सो गया था,
उस चमक में खो गया था,

पर तेरी चाहत में तब भी रोया,
आज भी हूँ रोया,
ये बात ज़रा याद रख लेना..!

.... ये बात ज़रा याद रख लेना..!!

फिर बजी बंशी है !

(नन्ही परी)



गोकुल के आंगने में फिर बजी बंशी है ..!
उन ग्वालो की हँसी में ये अलग कौन -सी हँसी है ..!!

यूँ कूदती -फादती हरदम नयी सी जगी है ..!
श्यामल नहीं ये तो श्वेत सी सजी है ..!!

गायो को चराती यूँ दूर कौन खड़ी है ..!
माखन चुराती क्यों ये छुपी - छुपी सी है ..!!

नटखट – शरारती , यूँ क्यों दूर दूर भागती है ..!
भोली सी प्यारी , वो हाथ ना किसी के आती है ..!!

मैया यशोदा की लाड़ली , करती सबको ही मोहित है ..!
गोकुल की दुलारी , करती हरदम सबको पुलकित है ..!!

डगर डगर यूँ गीत गाती, झूमती सी है ..!
पनघट से पानी भरती वो एक परी सी है .!!

रूप -रूप खिली यूँ वो हरदम सजी सजी सी है ..!
गोकुल के आंगने में फिर से मधुर बंशी बजी है ..!!

श्यामल नहीं ये तो श्वेत की लड़ी है ..!
गोकुल के आंगने में फिर बजी बंशी है ..!!

.....आंगने में फिर बजी बंशी है...!!

अनकही बातें

(कसक)



ना जाने क्यूँ आजकल,
कुछ कमी सी है इस जिंदगी में ..!!

क्यूँ कुछ खालीपन सा है,
इस भीड़ भरी जिंदगी में ..!!

क्यूँ कुछ ख़ामोशी सी छुपी है,
मेरी हर बात में ..!!

काली सी घटा क्यूँ है छाई,
इस चांदनी रात में ..!!

ना जाने क्यूँ हल्की सी कहर उठती है,
इस बेजान से दिल में ..!!

जी कर भी जीने की आश,
क्यूँ नहीं जगती है इस दिल में ..!!

लगता है कुछ रह गया,
कही किसी अजनबी शहर में ..!!

दिल के करीब का कोई बिछड़ गया,
किसी अनसुनी डगर में ..!!

.... किसी अनसुनी डगर में..!!

ये दोस्ती

(टेढ़े -मेढे रास्तें)



जिंदगी अब दोस्ती के सहारे ..!
मिले थे जो यूँ ही कभी किसी किनारे ..!!

किसी अजनबी से मिले थे तब ,
राहगीर आज उन्ही के बन बैठे ..!!

मिले जो कभी यूँ खुली सड़के ,
यूँ ही आज दौड़े चले जाते ..!!

सागर की लहरों में बहती ये कस्ती ..!
टेढ़े -मेढे राहों की वो खुली मस्ती ..!!

हँस के किसी को यूँ ही कभी छेड़ देना ..!
उसकी चाहत को उसकी दिल्लगी बना देना ..!!

खुले समुन्दर में यूँ ही गोते लगाना . .!
कभी भी किसी पर जोर से यूँ ही हँस जाना ..!!

गर्मी की करहरी धुप में यूँ झुलस जाना ..!
फिर भी यारो की यारी यूँ ही निभाना ..!!

जंगल की शाम में यूँ गुम से हो जाते ..!
सवेरे की महक में फिर यूँ चमक आते .!!

हुआ करते थे कभी हम किसी के कर्ज़दार ..!
आज अपनों के दिल के बन बैठे है राज़दार ..!!

कुछ यूँ बना ले आज हम अपनी ये कहानी ..!
देख ये जमाना कहे , जियो तो जियो ऐसे,

जैसे हर एक पल हो महकती जवानी ..!
..... हर एक पल हो महकती जवानी ...!!

वो मेरी पहली मुलाकात

(गुस्ताख़ दिल)

ये उस समय की बात है,
जब दिल ने मचलना शुरू किया ..

बचपन की मस्ती से निकलकर,
लड़कपन के जोश में सफर किया ..

ये दिल भी कुछ पगला सा था,
हर पल किसी खास का इंतज़ार सा था,

फिर वो पल आया एक दिन,
जब यूँ मिली वो खास,

होकर भी इसी जहां से,
वो सबसे जुदा सी थी,

देख उसे उस पल,
दिल में हलचल सी उठने लगी,

जाने आई कहा से वो अनजानी सी थी,
पर लगा इस रूह की बस वही प्यास सी थी,

सावले चेहरे पर झील सी आंखें,
उनमे कोई भी डूब ही जाता,

नाक पर छोटी सी रिंग,
सोने पर सुहागे से कम ना था,

गाल गुलाबी और होठो पर
वो हल्की मुस्कान सी थी,

नजरे ऐसी तीखी थी की,
दिल को घायल कर जाती,

उस छोटी सी मुलाकात में,
दिल तो हार ही बैठा,

जब - जब देखता उसे कही,
दिल जोर - जोर से धड़कता,

मिले कभी वो यूँही कही,
दो पल भी उसे देख ना पाता,

डर - डर कर भी उसी राह से चलते,
जिसमे वो चला करती,

कहने को दिल में बहुत कुछ होता,
पर क्यों कुछ कह ही नहीं पाता,

ऐसी थी वो मेरी पहली मुलाकात,
जो इस दिल में बस ही गयी,

अब हर दिन इसी ख्वाइश में जगे हम की,
बस दीदार हो उन्ही का जब -जब आंखें खुले मेरी..!

वीर जवान

(शीष नमन)



देश प्रेम की भावना से,
ओत प्रोत होकर ये गीत लिखता हूँ ..!

वीरो के उस टोली के बलिदानो को,
शीष नमन में करता हूँ ..!!

मन में थी उनकी इच्छा,
करनी थी उनको "भारतमाता" की रक्षा ..!

छोड़ चले गये पीछे,
अपनी वो महान गाथा और ये पावन दीक्षा ..!!

कूद पड़े थे जंगो के मैदानों में,
बिना सोचे कुछ और ..!

लड़ पड़े अंग्रेजो से सिर्फ अपने साहस से,
लिए बिना कुछ और ..!!

पवित्र एवम निर्मल था उनका वो अद्वितीय विचार !
क्यों सहते वो "भारतमाता" पे भीषण अत्याचार ..!!

मरने का ना था उनको कोई भय,
ना करता जीवन अब उनको लालाहित..!

चल पड़े तोड़ने ज़ंजीरो की वो ज़ाला,
करता उनको अब वही परम उत्साहित ..!!

आज़ादी "भारतमाता" के सिवा,
ना था उनका कोई और दूजा लक्ष्य ..!

रखे मान -सम्मान उनके विचारों का,
होकर हम देश -प्रेम में दक्ष्य ..!!

... होकर हम देश -प्रेम में दक्ष्य..!!

तू ना होती तो..!!

(एक छाप)



तू ना मिलती मुझे,
यूँ तन्हा मै ना होता ..!

नज़रें ना मिलती तुझसे,
यूँ दिल -हारा मै ना होता ..!

तेरी पलके ना झुकती,
यूँ बंजारा मै ना होता ..!

तू मुस्करायी ना होती,
यूँ घायल मै ना होता ..!

मेरे दिल में तू ना रहती,
यूँ खुद से बेगाना मै ना होता ..!

तेरे इश्क़ की छाव में ना रुका होता,
यूँ कड़ी धूप में जल रहा मै ना होता ..!

तेरे चेहरे के नूर में खोया ना होता,
यूँ सोया हर-पल आज मै ना होता ..!

तेरी गलियों से जो गुजरा ना होता,
यूँ आवारा आज मै ना होता ..!

तुझे देख दिल ये ना धड़का होता,
यूँ बेवजह रोया आज मै ना होता ..!

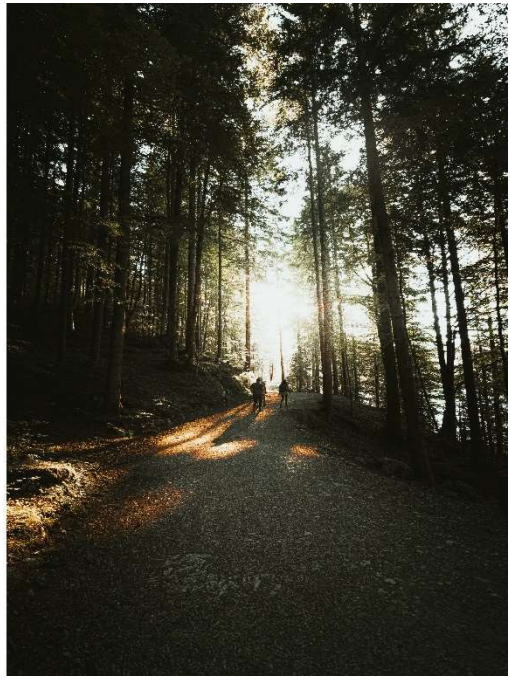
मिलके बातें तुझसे ना हुयी होती,
यूँ दिलजला आज मै ना होता ..!

तुझसे मोहब्बत ना हुयी होती,
यूँ तेरे मिलने की आश में बैठा, आज मै ना होता ..!

..... बैठा आज मै ना होता..!!

सपना

(कोई अपना)



वो कराहती रातें, जो कभी गुजरती नहीं थी .,
वो ठंडी हवा के झोखे, जो कभी थमती नहीं थी..!

बारिश की वो भौछारे , जो कभी रूकती नहीं थी .,
वो निशब्द शाम की तन्हाई , जो कभी बुझती नहीं थी!

आज उन सबका अन्त हो रहा है.,
फिर से एक नये सवेरे का जन्म हो रहा है ..!

इस दिल को अब चैनो -सुकून सा आ रहा है.,
इस बात को सुन रही है सुबह की ये खामोशियाँ .!

मिट रही है दो दिलो की बरसो की वो दूरियां .,
खिल रही है हर बाग के फूलों की महकती कलियाँ..,

चहक रही है ख़ुशी से गॉव की हर वो गलियाँ..!

दूर देश से लौट आया कोई अपना है .,
आखो के सामने सच होता ये मेरा सपना है ..!

.... सच होता ये मेरा सपना है..!!

सफर

(महकती खुशबु)



ये सफर ना होता तो,
जिंदगी यूँ सुहानी नहीं होती ..!

ठहर जाता कही तो,
ये महकती रुवानी नहीं होती ..!

टूट कर बिखर जाते जो हर –पल,
ये नयी कहानी नहीं होती ..!

शीत की लहर में ठिठुर ही जाते,
जो ये सावन की छरहरी धूप नहीं होती ..!

किनारे अकेले ही रह जाते,
जो सागर की लहरे उन तक नहीं पहुंचती ..!

बादल जो ना चलते,
मौसम की यूँ मेहरबानी नहीं होती ..!

हवा के ये झोंके ना होते ,
तो प्यार की वो खुशबु नहीं आती ..!

कली से फूल ना बनती ,
तो दिल की ये दिल्लगी नहीं होती ..!

काली अँधेरी रात ना होती,
तो सूरज के रोशनी की चाह मन में नहीं उठती ..!

ये दिलकश अनजाने रास्ते ना होते,
तो यूँ मंज़िल इतनी खूबसूरत नहीं लगती ..!

मिल के बिछड़ जाना तो दस्तूर है जीवन का,
जो ना निकलता इस सफर में,

यूँ तेरी -मेरी कहानी नहीं बनती ..!
....यूँ तेरी -मेरी कहानी नहीं बनती ..!!

पत्ता

(अंतर्-मन)



मैं समंदर मे तैरता एक पत्ता हूँ .,
किसी पेड़ की डाल से टुटा , एक सूखा पत्ता हूँ ..!

तन्हाई में गुमसुम , जाने किस से रूठा हूँ .,
बहे लहरे जिस दिशा में चला उसी ओर अब मैं हूँ

कड़ी धूप में जलता , हर भवंडर में झूमता मैं हूँ .,
बेपरवहा मस्त मौला सा गगन को चूमता मैं हूँ ..!

छूटा साथ अपनों का, दूर अपनों से परदेश में हूँ.,
सर-सर हवाओं से बिखर आया इस छोर अब मैं हूँ.!

हर पल नये खोज में, पहुंचता हर रोज मैं हूँ.,
समंदर में डूबता -उबरता, मदहोशी में मैं हूँ..!

तुफानो में उड़ जाता फिर गिरता उसी समंदर में हूँ,
खूब तैरता चलता, फिर क्यूँ पहुंचता वही मैं हूँ..!

इस लहर से उस लहर को मिलता, वो मुसाफिर मैं ही हूँ,
हर तरफ पानी से घिरा हूँ फिर भी बेबस प्यास में हूँ,

सोचता कभी यूँही, क्यूँ अब किसी के ध्यान में मैं हूँ.,
ना अन्त दिखता कही, ना ही आरंभ के संज्ञान में हूँ!

.... ना अन्त दिखता कही, ना ही आरंभ के संज्ञान में हूँ।

क्यूँ है ऐसा

(मदहोश दिल)

आज क्यूँ तेरी सोच में यूँ डूबा हुआ हूँ ..!
यादो में तेरे, क्यूँ इतना मदहोश सा हुआ हूँ ..!!

इस शोर भरी जिंदगी में,
क्यूँ आज खामोश इतना हूँ ..!

दिल की इन हरकतों से,
क्यूँ आज मज़बूर मै हुआ हूँ ..!!

तन्हाई मे क्यूँ ये दिल,
अक्सर रो पड़ता है .!

हर भीड़ में खुद को,
क्यूँ अकेला ही पाता है ..!!

दिल के बंद तहखाने में,
क्यूँ आज इतना शोर है ..!

ज़ंजीरो से लिपटा हुआ दिल,
फिर क्यूँ इतना आज़ाद है ..!!

अँधेरी काली रातो में,
चाँद देखने को क्यूँ मचला हुआ है ..!

शरद की ठिठुरती हवाओं में,
आशियाना खोजने को क्यूँ तैयार है ..!!

रह कर भी इसी जहाँ में,
कही खो जाने का डर सा क्यूँ है ..!

कहने को है बहुत कुछ फिर,
कुछ ना कहने का क्यूँ ऐतबार सा हुआ है ..!!

मिलने को तुमसे ये गुस्ताख़ दिल,
आज फिर क्यूँ इतना बेक़रार हुआ है ..!

कुछ ना चाहूँ, फिर तेरे एक दीदार की चाह,
क्यूँ मुझे हुयी इतनी आज है ..!

.... क्यूँ मुझे हुयी इतनी आज है ..!!

वटवृक्ष
(बूढ़ी बाहें)



वटवृक्ष की तरह यूँ फैला हूँ मैं,
पर जाने क्यूँ, यूँ सहमा सा हूँ मैं..!

जीवन की चाल में यूँ तो सवँरा हूँ मैं,
पर क्यूँ हरपल, यूँ बिखरा सा हूँ मैं..!

इस वटवृक्ष की वो जड़ें कट चुकी है,
अब वो प्यारी सी यादें भी धुल चुकी है..!

अपनी जड़े तो कब का खो चुका मैं,
थका हारा सा, यूँ अब सो चुका मैं..!

वो सपने क्यूँ अनजाने से लगने लगे है,
ये सब क्यूँ, अब बेगाने से होने लगे है..!

फैली वो हर साख भी अब मनचले है,
वो भी डगर- डगर, यूँ बहके से चले है..!

याद बस उस सावन की पहली बारिश मुझे,
उस गीली मिट्टी की भीनी भीनी खुशबु मुझे..!

जीने की आश जो जगी थी तब कभी,
उस बसंत की झंकार सी याद है बस मुझे..!

ख्वाबो के महल को संजोया था जो तब कभी,
यूँ वीराने से सजी आशियाना चुभती है अब मुझे..!

हर मौसम यूँ मुझसे बेईमान हो चले है,
क्यूँ बस अब पतझड़ की कहार ही चुभे है..!

हर लता से कई, नई जड़ें आ चुकी है,
वो हरदम हमे, यूँ जाने क्यूँ बाधे रखी है..!

.... यूँ बस बाधे रखी है..!!

कुछ कह रही है..!

(संज्ञान)



धूप शाम की कुछ कह रही है ..!
डूब ही जाना है हर किसी को,
एक दिन ये बतला रही है ..!

चिड़ियों की चहचकाहट कुछ कह रही है ..!
वक़्त रहते गीत गाते,
जीने की राह दिखा रही है ..!

सड़कों पे सरपट दौड़ती गाड़िया कुछ कह रही है.!
छू लो मंज़िल अपनी दौड़कर,
रुकना अब कही नहीं है ..!

उस छोटी सी मासूम की शरारत कुछ कह रही है!
मन के अपने द्वार खोलकर,
खुलकर हँसने की सीख दे रही है ..!

वो तन्हा बैठी अकेली लड़की कुछ कह रही है ..!
किसी के यादो में खोकर,
दिल लगाना कैसे ये बतला रही है ..!

माँ की वो प्यारी सी ममता कुछ कह रही है ..!
जिंदगी है छोटी माफ़ कर हर गलती को .,
लूटा बेपन्हा प्यार अपना, ये बात समझा रही है ..!

बच्चों की वो मुस्कुराती मासूमियत कुछ कह रही है ..!
कुछ पल रख जिंदगी में ..,
बन मासूम तू भी ये कह रही है ..!

वो प्रेम के दो पंछी कुछ कह रही है ..!
ये जीवन है प्यार से,
प्यार से निभाने की बात कह रही है ..!!

.....प्यार से निभाने की बात कह रही है ..!!

तेरी यादो में

(गुमसुम)



जिंदगी जी रहा हूँ तेरी यादो में ,
कुछ गुमसुम सा हो गया हूँ ..!

तेरी पलकों में आँसू ना आये ..इसलिए
होठो पे मुस्कान लिए जी रहा हूँ..!

तू जो मिले, खुद को भी भूल जाऊंगा ,
जो तू बोले, चाँद तारे भी तोड़ लाऊंगा..!

जिस दिन तू जो मिल जाएगी,
ख़ुशी से यूँ झूम उठूंगा ..!

ख्वाइश यही की तेरे पैरो तले,
जन्नत यूँ ही बिछा दूंगा ..!

मगर चाहत रहेगी हमेशा यही,
मैं साथ रहूँ या कोई और सही ..!

तू खुश रहे, जिंदगी सँवरे तुम्हारी.,
बस उस रब से यही दुआ रहेगी हमारी ..!

..... यही दुआ रहेगी हमारी ..!!

संवाद

(दो मित्रो की)

सुन एक बात तुम्हे बतलाता हूँ,
रोज़ रोज़ अब यही समझाता हूँ..!

बरसो बीत गये, कभी खुल के ना हँसे,
वो जब मीत मिले, कभी खुल के ना मिले..!

जिंदगी की लहर में यूँ बहते ही चले,
ना जाने कितनी कस्ती पीछे छोड़ चले..!

खुशियाँ खूब बटोरे, पर उन्हें नहीं जिये,
बग़ीचे खूब खिले, पर उसकी खुशबु ना लिये..!

रंगीन शाम भी थी बहुत, फिर भी दिलजले यूँ ही रहे,
भीड़ थी हर जगह फिर भी खामोश से हम रहे..!

किस कदर हम यूँ चले, जो खुद से ना मिले,
अब वो ही सपने, ढूढते फिरते कैसे यूँ जिये..!

अब वक़्त की मार ने ये सिखला दिया,
अपनों की याद ने आज फिर से रुला दिया..!

अपनों को छोड़ जो यूँ ही मैं खोता रहा,
दर्द इस गम का यूँ अब छुपाता फिर रहा..!

.....यूँ अब छुपाता फिर रहा..!!

नया दौर

(सन्नाटा)



मन में आशा, कंधो पे झोला लिये,
चला मैं अपने गांव की ओर..!

लगे थे घर घर में ताले,
छाया था सन्नाटा चारो ओर...!

पुरखो की ये धरोहर अब होती धूमल,
कुछ घर होते खंडहर कुछ बनते कूबड़...!

खेत खलियान सब बंजर हो गये,
बाग़ बगीचे भी अब सुने पड़ गये...!

गली कूचों में, ना अब कोई शोर सुनाई पड़ता,
पनघट भी धीरे से अपनी आह सिसक भरता...!

फर-फर लहलहाते वो अनाजों से भरे खेत,
उग आये उनपे भी झाड़ियों के लताएं और ये बेल,

अन्न धन से भरे पड़े वो बक्से बक्से अपने,
फूट गये टूट गये सारे, बिखर गये वो सपने...!

मन में आशा, कंधो पे झोला लिये,
चला मैं अपने गांव की ओर...!

लगे थे घर घर में ताले,
छाया था सन्नाटा चारो ओर ...!

अब ये कैसा नया जमाना आ गया,
पहुंचते -पहुंचते खुद को ही कही पीछे छोड़ आया .!

..... खुद को ही कही पीछे छोड़ आया .!

ऐ दिल संभल जा ज़रा

(जवां- दिल)

दिन बड़ा खुशनुमा था,
दिल भी जवां जवां सा था ...!

पर क्यूँ आज कुछ,
अलग सा लग रहा था ...!

कुछ ख़ामोशी सी थी फिज़ाओ में ..
हवायें भी थी कुछ अलग सी दिशा में . ...!

शायद इस दिल को किसी खास का इंतज़ार सा था,
जाने ये दिल पर इस बात से मैं तो अंजाना ही था!

तभी कानो में किसी के,
चलने की आहट सी लगी...!

पलट के यूँ जब हमने देखा,
कुछ देर वही ये दिल थम सा गया ...!

चाँद सा रोशन देख उसका चेहरा ,
मेरे आँखों में रह गया उसी का पेहरा...!

करीब से जब दीदार हुआ उनका,
सब कुछ बेजान सा लगा ...!

जब मिली निगाहे उनसे ,
उस पल में सारा जहां देख लिया ...!

बातो में उसकी ऐसा नशा था ,
सारा मयखाना हमको पिला दिया ...!

हँसीं में उसकी वह मिठास थी ,
सारा समां गूँज उठा ...!

पलके झुकाती , शर्माती जब वो चलती .. ,
दिल में कुछ हलचल सी मचलती ..!

जाने उसमे ऐसी क्या बात थी .. ,
जिंदगी जैसे उसमें आकर रुक सी गयी..!

दिल को अब समझाता हूँ, बहलता हूँ .. ,
हम उसके राह में नहीं ..!

पर इस दिल को समझा पाए कौन .. ,
दिल तो है दीवाना- मस्ताना...!

काँटों पर चलना इसको लगता है प्यारा .!

... काँटों पर चलना इसको लगता है प्यारा . ...!!

देश प्रेम

(समर्पण)



ठान लो इस जीवन में,
कुछ ऐसा कर जायेंगे ..!

मरने से पहले नाम अपना,
यूँ रोशन कर जायेंगे ..!

सदियों तक रहेगी,
तुम्हारी ये कहानी ..!

होगी तुम्हारी ये बात,
हर एक की जुबानी ..!

करो देश सेवा और,
करो इस देश का तुम उत्थान ..!

तभी होगा नाम तुम्हारा,
और मिलेगा हर एक से सम्मान ..!

हर कठिनाइयों में रहना खड़े,
होकर तुम दृढ़ ..!

लो आज तुम ये प्रतिज्ञा और,
बनाओ इसको अपने जीवन का प्रण..!

दिन की सुन्दर वेला हो,
या रात्रि की काली घोर सन्नाटा ..!

बढ़े चलो अपने पथ पर,
यही तुम्हारी कर्त्तव्य -परायणता ..!

निष्छल, अडिग, निडर होकर,
करो अपने कार्य का तुम निर्वाहन..!

लो संकल्प की हो तुम्हारे जीवन का,
हर एक पल, देश पे समर्पण ..!

..... हो तुम्हारे जीवन का हर एक पल, देश पे समर्पण ..!!

तेरी चाहत

(दिले-तमन्ना)



ऐ दिले-तमन्ना , ऐ दिल की दुआ ..,
तेरी चाहत में मुझको ऐसा क्या हुआ ..!

तू ही तू है अब हर जगह ..,
तेरे ही नूर से है रोशन सारा समां..!

मेरी खता पे खता को तूने माफ किया .,
फिर भी तेरी चाहत को मै ना समझ पाया .!

तेरे बिन अब ये जान पाया हूँ..,
तू नहीं तो बेजान सा हो गया हूँ ..!

ना जाने किस की तलाश में,
तुझे ना देख पाया ...!

अपने ही प्यार को पाकर,
उसे अपना ना बना पाया .!

हुयी खता मुझसे सनम ..,
पर मैं बेवफा तो नहीं ..!

आज भी हूँ वही दीवाना..,
जो था मै उस पल कभी ..!

तेरी उन पलो का गुनेगार हूँ मैं ..,
हा इसी बदनसीबी के लायक हूँ मैं ..!

पर उस पल के इंतज़ार में जी रहा हूँ ..,
जिस पल में तेरे साथ जिंदगी गुजार सकूँ .!

तेरी हर ख्वाइश पूरी करूँ,
यही चाहत दिल में अब रख कर जीऊं.!

ऐ दिले -चाहत आज़मा लेना,
कभी इस बेगाने को ..!

मैं ना आया उस पल तो,
समझ लेना इस जहां में मैं नहीं .!

इस काबिल भी नहीं की,
मैं अब तेरी चाहत को फिर से पा सकूँ .!

पर ऐ दिल , इतना जान लेना,
मैं तुझसे बेवफा तो कभी हो ना पाऊं..!

.... तुझसे बेवफा तो कभी हो ना पाऊं..!!

पगडण्डी

(एक किरण)



सुबह की वो किरण,
आ पहुंची है द्वारे अपने ..!

मन की इच्छा-आकांक्षाओं का,
खोलो भंडार तुम अपने ..!

जीवन की उस पगडण्डी में,
लेकर ज्ञान और साहस अपने ..!

चमक लेकर उस सूरज की लालिमा का,
हो अग्रसित अब तुम लेकर सपने ..!

चल पड़ो जीवन की उस पगडण्डी में तुम ..,
ना कहना कुछ भी छोटा , ना कभी कुछ कम ..!

प्यास लगे कभी तो रुक कर ,
पी लेना उस ममता के झरने का मीठा जल ..!

धूप लगे तो उस पगडण्डी की ,
प्यार की छाव में रुक लेना, उस एक पल ..!

..... प्यार की छाव में रुक लेना, उस एक पल ..!!

खामोश दिल

(एक बात)

तेरी अदायें, दिल में कुछ कर जाती है ..,
जाने हर पल, क्यों तू ही नज़र आती है ..!

दिल को समझाया बहुत ..,
पर इस दिल में मेरा कोई जोर नहीं .!

आंखें तेरी, लगती है प्यारी ..,
उसपे यू शर्माना दिल को घायल करती ..!

तेरी हर बात में कुछ ख़ास होता ..,
ना जाने क्यों तुझे ही सुनने का आस होता .!

तू रूठती है जिस दिन..,
दिल बैठ जाता है ..!

इस भीड़ में ये दिल अपने को ,
यू अजनबी सा पाता है ..!

तू ना रूठेगी, आज ये वादा कर ..,
पर मालूम है , वादें तो टूट ही जाते है ..!

ऐ दिल, रूठ जाना पर,
इस दिल को तोड़ मत देना ..!

क्योंकि इस दिल का दर्द,
दूर दूर तक होता है .!

....दूर दूर तक होता है...!!

ऐ जिंदगी

(कशिश)



जमी से फलक की आज दुआ उठी है,
ये दूरियां "दर्द ऐ दिल" सी रूठी है ..!

संभल के चलना ऐ जिंदगी,
कही मैं फिर से मचल ना जाऊं..!

तेरी इन बहकी-बहकी बातों से,
मैं अपनी राहों से फिसल ना जाऊं..!

फलक की खुशियाँ ना दे मुझे .,
बस मेरी आशियाने से दूर ना जाऊं. ..!

वो शोहरत वो कामयाबी ना भाये मुझे,
जिसके लिए मैं खुद से यूँ अजनबी हो जाऊं ..!

बाते अकसर दिलो को तोड़ देती है,
बस तुझे मेरी खामोशियों से सजाऊँ..!

जमाना मुझे चाहे परवाना ही कहे,
मैं बस तेरा बेगाना ना बनूँ ..!

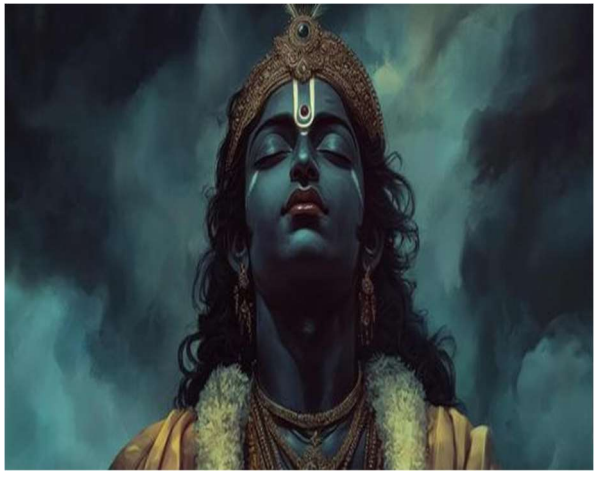
"दर्द ऐ सितम" ढा दे मुझपे कितने भी,
उस चुभन की सिसकी तक मैं ना लूँ..!

संभल के चलना ऐ जिंदगी,
कही मैं फिर से मचल ना जाऊं..!

.... मैं कही फिर से मचल ना जाऊं..!

प्रेरणा

(कल्पना की उड़ान)



ज्ञान के उस सागर का,
एक मधुर पान चाहता हूँ..!

आकाश में प्रज्वलित उस तेज का,
सहज अंश भाग चाहता हूँ..!

उस मंत्रमुग्ध भाव-विभोर का,
एकपात्र सुगंध चाहता हूँ..!

यत्र-तत्र फैले उस स्वाभिमान का,
सरल सा सर्वश्व भाव चाहता हूँ..!

सीना ताने खड़े हिमालय सा,
एक दृढ़ संकल्प चाहता हूँ..!

सकल समाज से परे,
क्षैतिज सा धैर्य चाहता हूँ..!

जीवित उस ज्योत का,
एक सुफल आत्मज्ञान चाहता हूँ...!

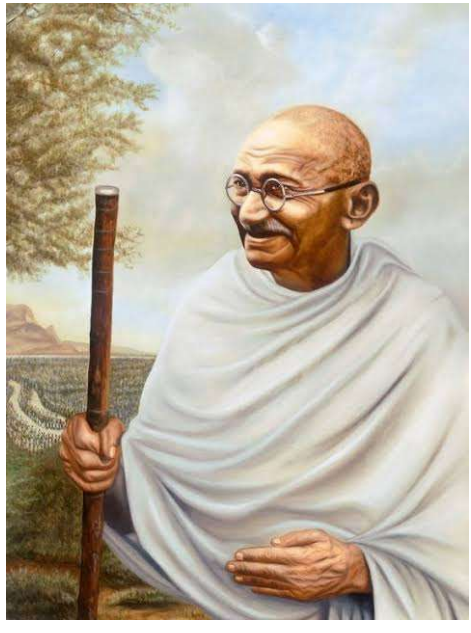
मोह के इस बंधन का,
सुरूप तिरस्कार चाहता हूँ..!

जीवन-मरण के इस चक्र का,
एकमात्र संज्ञान चाहता हूँ..!

...एकमात्र संज्ञान चाहता हूँ...!!

संकल्प

(भारत एक खोज)



मेरे प्रिय "**बापू**" आप मुझे प्रेरित करते है,
हम अपने दिल के ये "**ढाई आखर**" लिखते है,

उस दीप की तरह हर पल जलते रहे आप,
खुद जल कर जग रोशन करते रहे आप,

दिल में आजादी का जज्बा जलाते रहे आप,
उन अंग्रेजो को यूँ पल-पल डराते रहे आप,

सत्य अहिंसा के मार्ग में सदैव अड़िग रहे आप,
निर्भल हरिजन को स्वावलम्बी बनाते रहे आप,

स्वतंत्र भारत के लिये पूर्ण समर्पण देते रहे आप,
सभी को कारवाँ में यूँ जोड़ते आगे बढ़ते रहे आप,

एक पल भी विचलित न हुये, निडर चलते रहे आप,
यूँ कभी मौन तो कभी चिंतन में गंभीर होते रहे आप,

आजादी में साँस लेना सीखा है आप से ही,
मन की इच्छाओ से जीना सीखा है आप से ही,

"**भारत छोड़ो**" की गूँज अब भी कानो में गूँजती है,
जातिवाद के बंधन फिर क्यों आज भी आँखों में यूँ कौंधती है?

उन अंग्रेजो के गुलामी से बचकर तो निकल आये है,
पर भ्रष्टाचार की जंजीरों से क्यों आज भी जकड़े हुये है?

"**बापू**" आपकी सब बातें याद है सभी को,
फिर क्यों हर गली में कूड़ो का अंभार खड़ा है?

२ अक्टूबर, **३० जनवरी** याद रहती है सभी को,
फिर क्यों शाम ढलने तक सब भूल जाते है?

आज दिल से एक शपथ मैं लेता हूँ,
भारत माँ के चरणों में शीश अर्पण मैं करता हूँ,

न गंदगी करूँगा, न गंदगी करने दूँगा,
बुद्ध के मार्ग में सहज मैं भी बढ़ूँगा,

समाज की कुरीतियों से मैं भी लड़ूँगा,
अशिक्षा को शिक्षा का पाठ ही पढ़ाऊँगा,

स्त्री के सम्मान में यूँ तत्पर खड़ा मिलूँगा,
हर किसी को समान अधिकार दिलाकर रहूँगा ,

दांडी यात्रा से नमक का स्वाद जो बढ़ाया आपने,
मैं भी भाईचारे का ये स्वाद समाज में मिलाऊँगा,

असहयोग आंदोलन से जो अंग्रेजो को सहमा दिया आपने,
उसी असहयोग आंदोलन से मैं भी भ्रष्टाचार को कुचल डालूँगा,

अब मैं ये समझ पाया हूँ आपकी वो बात,
फिर से मैं आज दौहराता हूँ वही बात,

"शक्ति शारीरिक क्षमता से नहीं आती है,
यह एक अदम्य इच्छाशक्ति से आती है"

उसी अदम्य इच्छाशक्ति का मैं भी दम भरता हूँ,
"बापू" आपको मैं कोटि कोटि नमन करता हूँ,

.....कोटि कोटि नमन करता हूँ .....!

राम भक्त

(हनुमान)



कहा गये वो रामयुग, आ गये जो कलियुग,
राम मिले न वन में, राम मिले न जन में,

लंका जले है क्षण में, शंख बजे है रण में,
तीर चले है पल में, भीड़ बड़ी है छल में,

भक्त पड़े है पग में, सख्त खड़े है जग में,
प्रेम जगे है तन से, मीत मिले है धन से,

भाव बढ़ा है भाव से, स्नेह घटा है घाव से,

खोज अब है व्यर्थ सी, सोच जगी है अमर्त्य सी,
राम बसे है चिंतन में, राम बसे है ध्यान में,

राम बसे है तन में, राम बसे है मन में,
राम बसे है तुझमे, राम बसे है मुझमे,

श्रीराम है सिद्ध से, श्रीराम है दिव्य से,
मन से रावण जो निकाले, राम खड़े है उस पल में,

.... राम खड़े है उस पल में...

शिखर

(लक्ष्य)



शिखर में पहुंचना ही जीवन कहलाती है,
और कठिन श्रम का मजा ही कुछ और है,

माथे में पसीने की बूंदे छलकती रहती है,
और उन बूंदों का रोशनी में चमकना ही कुछ और है,

हवाएं तो मैदानों में भी चला करती है,
पर शिखर में बैठ, हवाओ का मजा ही कुछ और है,

कभी यूँ टूट कर जीवन खुद से रूठा करती है,
फिर खुद ही को मनाने का मजा ही कुछ और है,

यौवन के जोश में जीवन अक्सर बिखर जाया करती है,
पर खुद को संभालकर चलने का मजा ही कुछ और है,

कभी पाँव लड़खड़ाते है, कभी डगर ही डोलती है,
फिर भी उस राह में चलने का मजा ही कुछ और है,

वक़्त दर वक़्त जीवन में मुश्किलें आती रहती है,
पर उन मुश्किलों को पार करने का मजा ही कुछ और है,

जीवन तो पल-पल ख्वाईशो का अम्बार खड़ा करती है,
पर ख्वाईशो में अपनों को जोड़ने का मजा ही कुछ और है,

बेइंतहा जिद हो जीवन में, मंजिल यही सिखलाती है,
और उस जूनून के पागलपन का मजा ही कुछ और है,

मंजिल में पहुंचकर अक्सर जीवन रुक जाया करती है ,
पर आगे बढ़कर और मंजिलो को पाने का मजा ही कुछ और है,

... और मंजिलो को पाने का मजा ही कुछ और है...।

अनभिज्ञ खोज

(अज्ञानी पुरुष)

अज्ञान में लिप्त यूँ , वो बस चला जा रहा था,
मनमौजी खुद को बताता, यूँ चला जा रहा था,

उस मुलाकात से बेखबर, यूँ अनजान सा था,
राह में आगे जाने किससे मुख़ातिब होना था,

मानो, क्या उथल-पुथल सा मचलने वाला था,
वक़्त भी इसी इंतज़ार में, यूँ बैचैन हो रहा था,

पल दो पल, निकट उसके होता चला जा रहा था,
मुश्किल यही की, उसे कुछ मालूम नहीं हो रहा था,

छिन रही थी आजादी, गुलामी की ओर चला जा रहा था,
बस सभी उसे चढ़ाते, वो भी खूब आनंद उठा रहा था,

एक बात चली फिर यूँ, अब माहोल गमगीन होने लगा,
वक़्त रहते सँभलने का मौका भी शायद कम ही मिला,

खुश बहुत पहले था वो, अब जाने क्या घटना घटी,
फिर पता चला, कुछ दिन पहले ही उसकी शादी हुयी,

..... कुछ दिन पहले ही उसकी शादी हुयी...।

राजभाषा

(हिंदी)

हिंदी है हम, हे हिन्दोस्ता,
है तुझे अब वतन का वास्ता,

हिंदी की सीख ले, हिंदी को जान ले,
फिर तू भी मान लेगा, सबकुछ जान लेगा,

प्रेम में हिंदी का भाव है, करुणा में हिंदी का राग है,
ममता में हिंदी का रस है, प्रीत में हिंदी के गीत है,

हिंदी में सौम्यता है, हिंदी में दिव्यता है,
हिंदी में सरलता है, हिंदी में प्रबलता है,

राग में अनुराग में, छंद में अलंकार में,
हिंदी की चमक ही उसकी प्रखर माप है,

मान में, सम्मान में, ज्ञान में, पहचान में,
हिंदी का ही रंग रूप, उसी की ही छाप है,

मिलता नहीं इतना अथा सागर ज्ञान,
जो की हिंदी से हमें मिला है,

सभी भावो का समावेश जो हिंदी में सहज ही घुला है,
हिन्द से हिंदी, हिंदी से ये हिन्दोस्ता हमारा है,

ये चमन का गुलिस्ता ये हिन्दोस्ता हमारा है,
.....ये हिन्दोस्ता हमारा है,

जय हिन्द जय भारत।

भगत बगुला

(पंचतंत्र की कथा)

एक तरण ताल में मेला सा था,
रहता वहां एक भगत बगुला था,

आलस बड़ा और आँखे भी कम दिखती थी,
उसके आँखों में यूं छा रही अधियारी थी,

एक रात बहुत घनघोर अँधेरी थी,
बगुला ने ठानी कपट की माया थी,

बहाने लगा घड़ियाली आँसू फुट-फुट कर,
ज्ञान धर्म की झूठी- झूठी बातें यूं बतलाकर,

कहने लगा "किसी को खाने के लिए नहीं मारूंगा..,
..... स्वयं मर जाऊंगा पर किसी की हत्या नहीं करूँगा,"

" वैसे भी यहाँ सूखा पड़ने वाला है....,
.... जीवन तो यूं मेरा नष्ट होने वाला है"

बारह वर्षो की सूखा कहकर, शब्दों के जाल को उसने यूं बुना था,
त्रिकालदर्शी महात्मा की भविष्यवाणी बताकर सबको यूं फसाया था,

सब जगह हाहाकार मच गया, सब दौड़े-दौड़े उसके पास आने लगे,
"हे ज्ञानी, हमे इस अकाल सूखे से बचाओ ना..." सब कहने लगे,

यूं चाल चली उसने, कहा "दूर यहाँ से एक बहुत बड़ा जलाशय है..,
.... जिसमे गिरता झरने का पानी है ..और कभी सूखा नहीं पड़ता है,"



"तुम सब चाहो तो एक एक को पीठ पर ले जाऊंगा...,
..... मैं अपने ज्ञान धर्म से ये जीवन सेवा कार्य में लगाऊंगा"

सब ये सुनकर मान गए और बगुले की जयजयकार करने लगे,
बगुला मन ही मन बहुत खुश हुआ ये सब जल्दी यूं मान गये,

हर दिन एक एक को ले जाकर दूर पहाड़ी पर मारकर खा जाता था,
फिर आकर झूठ कहता था की वह कुशल मंगल पहुंच गया था,

यूं बारी बारी से सबको पटक पटक कर मार कर खाने लगा,
उस पहाड़ी पर तो यूं हड्डियों का अम्भार खड़ा होने लगा,

एक दिन केकड़े की बारी आयी, उसे भी पीठ पर ले कर बगुला चला,
हड्डियों के अम्बार देख केकड़ा समझ गया कपटी ने चाल चला,

केकड़े ने हिम्मत से तुरंत अपने पंजों से बगुले की गर्दन दबा डाली,
तब तक दबाए रखी, और दुष्ट बगुले की प्राण पखेरु उडा डाली..

सीख यही की "दूसरों की बातों पर आंखें मूंदकर विश्वास नहीं करना ..
..... और मुसीबत में धीरज व बुद्धिमानी से हीं कार्य करना ...."

"रङ्ग लेहे जेय्....रङ्ग ..!!

(रङ्ग)

रङ्ग लेहे जेय् ....!
रङ्ग लेहे जेय् ....!!
अनुवाद : (रङ्ग हूँ मै... रङ्ग हूँ मै...!!)

पुष्पा खु रौह ना शीद बेयुँथोलो तेय्,
गोबरंग खु छन्त रंगा तेय्,
अनुवाद : (सिर पर बर्फ सी सफ़ेद पगड़ी(बेयुँथोलो) पहने, शरीर में प्रकाशमय पारंपरिक कपड़े(रंगा) पहने)

लिकेय् खु यंक्ति ना हिलशिगे निधेय् गोंगोरोः तेय् ,
निच्चे-मुँच्चे ठिकेय् निधेय्,
अनुवाद : (पैरो में नदी की लहरों सी इठलाती-बलखाती घुंघुरू, और दिन रात गाते झूमते रहता)

रङ्ग लेहे जेय् ....!
रङ्ग लेहे जेय् ....!!
अनुवाद : (रङ्ग हूँ मै... रङ्ग हूँ मै...!!)

तिगेय् ला खु डाल तेय् ,
तिगेय् खु तलवार तेय् ,
अनुवाद : (एक हाथ में ड़ाल और एक में तलवार लिए)

राधेय् लंग बइरेय तेय् ,
गेशीधेय् निधेय् ,
अनुवाद : (आने वाली हर मुसीबत(शत्रु) से लड़ते रहता)

रङ्ग लेहे जेय् ....!
रङ्ग लेहे जेय् ....!!
अनुवाद : (रङ्ग हूँ मै... रङ्ग हूँ मै....!!)

पुष्या खु नी ना डॉक्टेय् मिचयुक्ति तेय्,
गोबरंग खु च्युंगभाला तेय्,
अनुवाद : (सिर पर सूरज सी चमक ओढ़नी(मिचयुक्ति) ओढ़े, शरीर में पारंपरिक वेषभूषा(च्युंगभाला) पहने)

नऔकसुम मत्थि ताधेय्,
अनुवाद : (अपनी लाज का गहना संजोये)

रङ्ग लेहे जेय् ....!
रङ्ग लेहे जेय् ....!!
अनुवाद : (रङ्ग हूँ मै... रङ्ग हूँ मै....!!)

रच्चे खु छोकोर्रो बाली तेय्,
मछंग ना छन्त चन्द्रहार तेय्,
अनुवाद : (कानों में सुन्दर बाली और गले में पवित्र ज्योति(लों) जैसी चंद्राकार हार पहने)

सालेय् फुलिय् गला खु..
चभङ्ग ची ल्हा ना डोके निधेय्,
अनुवाद : (अमूल्य रत्नो से बुने आभूषण पहने, पूर्णिमा की चाँद सी चमक लिये हुये)

रङ्ग लेहे जेय् ....!
रङ्ग लेहे जेय् ....!!
अनुवाद : (रङ्ग हूँ मै... रङ्ग हूँ मै...!!)

लखों बोंगशी तेय् ,
लुंखो म्यांग अखन तेय् ..
अनुवाद : (हाथों में कुदाल लिये और पीठ में डोका(म्यांग) में हँसिया(अखन) लिये)

मङ्गला बंखर ही रैजा तो देधेय्,
अनुवाद : (प्रातः काल ही खेतो को जाते हुये)

रङ्ग लेहे जेय् ....!
रङ्ग लेहे जेय् ....!!
अनुवाद : (रङ्ग हूँ मै... रङ्ग हूँ मै...!!)

क्येर गबला दुर्खो न्यूक्टंग, रुखू बंखू सै सैमा ठूकतेय,
अनुवाद : (छत के ऊँचे में देव(गबला), गर्भगृह में दैवीय शक्ति(न्यूक्टंग) और कण कण में दैवो को पूजता)

हंग थेयदे-थेयदे ये दाङ अइनी पुक्ते,
अनुवाद : (फिर ऊँचे-ऊँचे पहाड़ चोटी को यूँही पार (लाँघ) करता)

रङ्ग लेहे जेय् ....!
रङ्ग लेहे जेय् ....!!
अनुवाद : (रङ्ग हूँ मै... रङ्ग हूँ मै...!!)

सूखु खों थकशीधेय् दूखु खों रक्त निशिधेय्,
अनुवाद : (सुख में साथ रहते हुये और दुख में साथ निभाते हुये)

सूखु - दूखु जम्मैइ ज़ूनी ..हिकेय्-ठिकेय् कन्धेय्..
अनुवाद : (हर सुख दुखयूही हँस नाच कर अपने पूरी जीवन व्यतीत करने वाला)

अइना रङ्ग लेहे जेय्.....!
रङ्ग लेहे जेय् ....रङ्ग ..!!
अनुवाद : (ऐसा रङ्ग हूँ मै... रङ्ग हूँ मै... रङ्ग हूँ मै...!!))

प्रसंग:-

मेरी यह कविता मेरी लोक भाषा में लिखी गयी है। इसमें मैंने अपने पारम्परिक वेशभूषा एवं जीवनशैली का चित्रित वर्णन किया है। इसमें मैंने हमारे कठिन जीवन और दृढ़ संकल्प की कुछ झलकियों को दर्शाया है। यह लोक भाषा "रङ्ग **बोली**" के नाम से जाना जाता है तथा इस समुदाय में जन्मे लोगो को "रङ्ग" कहा जाता है।



कुछ अंश शायरी के:

(01)

"किसी के इश्क़ में खुद को, मिटा के तो देखो ...!
दिल को जो चैनो -सुकून मिलेगा ,
किसी जन्नत से कम ना होगा ..!!

"वो मिले या ना मिले,
दिल मे अरमान जला के तो देखो ..!
जिंदगी के किसी मोड़ पर वो जब यूँ मिलेगी ..!
वो पल खुदा के दीदार से कम ना होगा ..!!"

(02)

"दिल ये चाहे की चीख - चीख कर,
.... हाल-ए-दिल उसे बयाँ करें....!"
"पर कसमकश कि जुबाँ भी कायल होकर,
... बस टक-टकी यूँ उनकी भरें...!"

कुछ अंश शायरी के:

(03)

"थक सा गया हूँ, जीवन के इस दौड़ में...अब,
रुकना चाहूँ किसी के आँचल के छाँव में..!

"मिले प्यार जिंदगी भर का ना सही...बस,
दो वक़्त सीने से लगा मूरत उतार लूँ इस दिल में..!!"

(04)

"हमें चाहत नहीं किसी जन्नत की, ना ही उस खुदा की...!
बस दिल की आरज़ू इतनी सी.....,

जब-जब आंखे खुले मेरी, दीदार हो बस उस एक अपने की..!!"

कुछ अंश शायरी के:

(05)

"तुम मेरे गुनहगार हो या मैं तुम्हारा हूँ.,
पर मोहब्बत के गुलाम तुम भी हो मैं भी हूँ...,

तकदीर में ही मिलना नहीं लिखा था शायद..
इसलिए तब तुम खफा थे आज मैं तुमसे खफा हूँ..!!"

(06)

"इन लब्जों को सहज कर बाँध ली पोटली मैने.,
वक़्त को यूँ थाम बाँध ली ये मुट्ठी मैने...,

यूँ बेरुखी से न कर विदा मुझे, दिल के संदूक मे भर ले यादे मेरी..
जो बहे आँसू तेरे नैनों से, समझ ले वही फ़साना ज़िंदगानी है मेरी ..!!"

कवि का परिचय



कवि का जन्म हिन्दी दिवस "14 सितम्बर" को हिमालय की गोद में बसे प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण तहसील "धारचूला" में हुआ है। कवि का पैतृक गांव "बुदी" है जो जिला पिथौरागढ़ (उत्तराखंड) से लगभग 150 किलोमीटर की दूरी पर पौराणिक कैलाश मानसरोवर यात्रा मार्ग पर स्थित है।

कवि की प्रारंभिक शिक्षा 'प्राइमरी पाठशाला बुदी' में पूरी हुयी। आगे की पढ़ाई 'विवेकानन्द विद्या मंदिर' एवम 'राजकीय इंटर कालेज' धारचूला जिला पिथौरागढ़ (उत्तराखण्ड) से प्राप्त किया। तत्पश्चयात इंजीनियरिंग की दीक्षा उन्होंने 'मौलाना आज़ाद राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान भोपाल (मध्य प्रदेश)' से प्राप्त किया।

कवि की रूचि सदैव ही विभिन्न भाषाओ के अध्ययन में रही है, अपनी मातृभाषा "रङ्ग बोली" के अलावा संस्कृत, हिंदी एवम अंग्रेजी भाषा का ज्ञान स्कूल के शिक्षा के दौरान ही ग्रहण कर लिया तथा अन्य भाषाओ के अध्ययन में भी कवि की रूचि सदैव बनी रहती है।